# श्री कमला सहस्रनाम स्तोत्रं

### श्री कमला सहस्रनाम स्तोत्रं

तामाह्वयामि सुभगां लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजितां |
एह्येहि देवि पद्माक्षि पद्माकरकृतालये || 1 ||

आगच्छागच्छ वरदे पश्य मां स्वेन चक्षुषा |
आयाह्यायाहि धर्मार्थकाममोक्षमये शुभे || 2 ||

एवं विधैः स्तुतिपदैः सत्यैः सत्यार्थसंस्तुता |
कनीयसी महाभागा चंद्रेण परमात्मना || 3 ||

निशाकरश्च सा देवी भ्रातरौ द्वौ पयोनिधेः |
उत्पन्नमात्रौ तावास्तां शिवकेशवसंश्रितौ || 4 ||

सनत्कुमारस्तमृषिं समाभाष्य पुरातनं |
प्रोक्तवानितिहासं तु लक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमं || 5 ||

अथेदृशान्महाघोराद्दारिद्र्यान्नरकात्कथं |
मुक्तिर्भवति लोकेऽस्मिन् दारिद्र्यं याति भस्मतां || 6 ||

सनत्कुमार उवाच |
पूर्वं कृतयुगे ब्रह्मा भगवान् सर्वलोककृत् |
सृष्टिं नानाविधां कृत्वा पश्चाच्चिंतामुपेयिवान् || 7 ||

किमाहाराः प्रजास्त्वेताः संभविष्यंति भूतले |
तथैव चासां दारिद्र्यात्कथमुत्तरणं भवेत् || 8 ||

दारिद्र्यान्मरणं श्रेयस्त्विति संचिंत्य चेतसि |
क्षीरोदस्योत्तरे कूले जगाम कमलोद्भवः || 9 ||

तत्र तीव्रं तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्वरं |
ददर्श पुंडरीकाक्षं वासुदेवं जगद्गुरुं || 10 ||

सर्वज्ञं सर्वशक्तीनां सर्वावासं सनातनं |
सर्वेश्वरं वासुदेवं विष्णुं लक्ष्मीपतिं प्रभुं || 11 ||

सोमकोटिप्रतीकाशं क्षीरोदविमले जले |
अनंतभोगशयनं विश्रांतं श्रीनिकेतनं || 12 ||

कोटिसूर्यप्रतीकाशं महायोगेश्वरेश्वरं |
योगनिद्रारतं श्रीशं सर्वावासं सुरेश्वरं || 13 ||

जगदुत्पत्तिसंहारस्थितिकारणकारणं |
लक्ष्म्यादिशक्तिकरणं जातमंडलमंडितं || 14 ||

आयुधैर्देहवद्भिश्च चक्राद्यैः परिवारितं |
दुर्निरीक्ष्यं सुरैः सिद्धैर्महायोनिशतैरपि || 15 ||

आधारं सर्वशक्तीनां परं तेजः सुदुस्सहं |
प्रबुद्धं देवमीशानं दृष्ट्वा कमलसंभवः || 16 ||

शिरस्यंजलिमाधाय स्तोत्रं पूर्वमुवाच ह |
मनोवांछितसिद्धिं त्वं पूरयस्व महेश्वर || 17 ||

जितं ते पुंडरीक्ष नमस्ते विश्वभावन |
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज || 18 ||

सर्वेश्वर जयानंद सर्वावास परात्पर |
प्रसीद मम भक्तस्य छिंधि संदेहजं तमः || 19 ||

एवं स्तुतः स भगवान् ब्रह्मणाऽव्यक्तजन्मना |
प्रसादाभिमुखः प्राह हरिर्विश्रांतलोचनः || 20 ||

श्रीभगवानुवाच |
हिरण्यगर्भ तुष्टोऽस्मि ब्रूहि यत्तेऽभिवांछितं |
तद्वक्ष्यामि न संदेहो भक्तोऽसि मम सुव्रत || 21 ||

केशवाद्वचनं श्रुत्वा करुणाविष्टचेतनः |
प्रत्युवाच महाबुद्धिर्भगवंतं जनार्दनं || 22 ||

चतुर्विधं भवस्यास्य भूतसर्गस्य केशव |
परित्राणाय मे ब्रूहि रहस्यं परमाद्भुतं || 23 ||

दारिद्र्यशमनं धन्यं मनोज्ञं पावनं परं |
सर्वेश्वर महाबुद्धे स्वरूपं भैरवं महत् || 24 ||

श्रियः सर्वातिशायिन्यास्तथा ज्ञानं च शाश्वतं |
नामानि चैव मुख्यानि यानि गौणानि चाच्युत || 25 ||

त्वद्वक्त्रकमलोत्थानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः |
इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रतिवाक्यमुवाच सः || 26 ||

श्रीभगवानुवाच |
महाविभूतिसंयुक्ता षाड्गुण्यवपुषः प्रभो |
भगवद्वासुदेवस्य नित्यं चैषाऽनपायिनी || 27 ||

एकैव वर्ततेऽभिन्ना ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः |
सर्वशक्त्यात्मिका चैव विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता || 28 ||

सर्वैश्वर्यगुणोपेता नित्यशुद्धस्वरूपिणी |
प्राणशक्तिः परा ह्येषा सर्वेषां प्राणिनां भुवि || 29 ||

शक्तीनां चैव सर्वासां योनिभूता परा कला |
अहं तस्याः परं नाम्नां सहस्रमिदमुत्तमं || 30 ||

शृणुष्वावहितो भूत्वा परमैश्वर्यभूतिदं |
देव्याख्यास्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मतां || 31 ||

अथ स्तोत्रं ||

ॐ श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्त्वा शांता चिच्छक्तिरव्यया |
केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा || 32 ||

व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमा मतोद्भवा |
निर्व्योमा व्योममध्यस्था पंचव्योमपदाश्रिता || 33 ||

अच्युता व्योमनिलया परमानंदरूपिणी |
नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा || 34 ||

ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा |
स्नेहाभासा निरानंदा विभूतिर्विमला चला || 35 ||

अनंता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानंदा विकाशिनी |
शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी || 36 ||

मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरंगा निरामया |
ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकासिनी || 37 ||

स्वच्छंदशक्तिर्गहना निष्कंपार्चिः सुनिर्मला |
स्वरूपा सर्वगाऽपारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता || 38 ||

अकळंका निराधारा निस्संकल्पा निराश्रया |
असंकीर्णा सुशांता च शाश्वती भासुरी स्थिरा || 39 ||

अनौपम्या निर्विकल्पा निर्यंत्रा यंत्रवाहिनी |
अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा || 40 ||

अग्राह्या ग्राहिका गूढा गंभीरा विश्वगोपिनी |
अनिर्देश्याऽप्रतिहता निर्बीजा पावनी परा || 41 ||

अप्रतर्क्याऽपरिमिता भवभ्रांतिविनाशिनी |
एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी || 42 ||

सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिर्ध्रुवा गतिः |
ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा || 43 ||

अक्षया वर्धमाना च सुप्रकाशा विहंगमा |
नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा || 44 ||

तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी |
अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्वाणदायिनी || 45 ||

अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परंपरा |
संधानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी || 46 ||

लक्ष्मीस्तुष्टिर्महाधीरा शांतिरापूरणेनवा |
अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः || 47 ||

सत्या प्रह्वा क्रियायोग्या ह्यपर्णा ह्लादिनी शिवा |
संपूर्णाह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमतावहा || 48 ||

रजोवत्यर्कप्रतिभाऽऽकर्षिणी कर्षिणी रसा |
परा वसुमती देवी कांतिः शांतिर्मतिः कला || 49 ||

कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः |
संबोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा || 50 ||

अमृतस्यंदिनी जीवा जननी खंडिका स्थिरा |
धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमती रसा || 51 ||

शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च |
प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पांडुरवासिनी || 52 ||

अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्मांडवासिनी |
अनंतरूपाऽनंतात्माऽनंतस्थाऽनंतसंभवा || 53 ||

महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिंभरा |
महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा || 54 ||

प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कंपा प्ररोहा बुद्धिगोचरा |
नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी || 55 ||

सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका |
सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी || 56 ||

नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना |
व्यक्ताऽव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता || 57 ||

संकल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा |
भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता || 58 ||

प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा |
कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी || 59 ||

नीरूपोद्भिन्नसंताना सुयंत्रा त्रिगुणालया |
महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया || 60 ||

महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरंजना |
प्रकृतिर्भगवन्मायाशक्तिर्निद्रा यशस्करी || 61 ||

चिंता बुद्धिर्यशः प्रज्ञा शांतिराप्रीतिवर्धिनी |
प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा || 62 ||

काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा |
सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला || 63 ||

वरिष्ठा विजया वीरा जयंती विजयप्रदा |
हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगंधर्वसेविता || 64 ||

योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा |
महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया || 65 ||

ब्रह्मेंद्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा |
त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा || 66 ||

सुतारा तारिणी तारा दुर्गा संतारिणी परा |
सुतारिणी तारयंती भूरितारेश्वरप्रभा || 67 ||

गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्या सुशोभिता |
अध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी || 68 ||

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दंडनीतिर्नयात्मिका |
गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा || 69 ||

विश्वंभरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा |
सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्तिः सुधा सर्वार्थसाधिनी || 70 ||

इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्भूतिः कीर्तिः श्रद्धा दया मतिः |
श्रुतिर्मेधा धृतिर्ह्रीः श्रीर्विद्या विबुधवंदिता || 71 ||

अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्करा |
प्रतिज्ञा संततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी || 72 ||

स्मृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यंती मध्यमा समा |
संध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती || 73 ||

कांक्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया |
सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी || 74 ||

सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना |
हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा || 75 ||

चंद्रा हिरण्मयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा |
त्रैलोक्यमंडना नारीनरेश्वरवरार्चिता || 76 ||

त्रैलोक्यसुंदरी रामा महाविभववाहिनी |
पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता || 77 ||

पद्मयुग्मधरा कांता दिव्याभरणभूषिता |
विचित्ररत्नमुकुटा विचित्रांबरभूषणा || 78 ||

विचित्रमाल्यगंधाढ्या विचित्रायुधवाहना |
महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवंदिता || 79 ||

कालसंकर्षिणी घोरा तत्त्वसंकर्षिणी कला |
जगत्संपूरणी विश्वा महाविभवभूषणा || 80 ||

वारुणी वरदा व्याख्या घंटाकर्णविराजिता |
नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी || 81 ||

ऐंद्री कामधनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा |
दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना || 82 ||

गरुडारूढहृदया चांद्री श्रीर्मधुरानना |
महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा || 83 ||

युगांतहुतभुग्ज्वाला कराला पिंगला कला |
त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी || 84 ||

महोत्कटा महारक्ता महाचंडा महासना |
शंखिनी लेखिनी स्वस्था लिखिता खेचरेश्वरी || 85 ||

भद्रकाली चैकवीरा कौमारी भगमालिनी |
कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका || 86 ||

बालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका |
अजिता वर्षिणी रीतिर्भेरुंडा गरुडासना || 87 ||

वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा |
महामंदारविभवा शिवानंदा रतिप्रिया || 88 ||

उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी |
सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया || 89 ||

सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रबोधिनी |
हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्धरा || 90 ||

सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी |
पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा || 91 ||

महाधना च या शृंगी कर्दमी कंबुकंधरा |
आदित्यवर्णा चंद्राभा गंधद्वारा दुरासदा || 92 ||

वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा |
कल्याणी वरदा वामा वामेशी विंध्यवासिनी || 93 ||

योगनिद्रा योगरता देवकीकामरूपिणी |
कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा || 94 ||

कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया |
विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी || 95 ||

बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता |
घंटानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिस्स्वना || 96 ||

महादेवेंद्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना |
सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी || 97 ||

आर्या यशोदासुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा |
दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी || 98 ||

भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी |
क्षीराब्धितनया पद्मा कमला धरणीधरा || 99 ||

रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी |
प्रज्ञाधाराऽमितप्रज्ञा वेदमाता यशोवती || 100 ||

समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला |
अंतर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरागतिः || 101 ||

दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला |
अंबिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता || 102 ||

सुदीप्ता लेलिहाना च कराला विश्वपूरका |
विश्वसंहारिणी दीप्तिस्तापनी तांडवप्रिया || 103 ||

उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी बिंदुमालिनी |
क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा || 104 ||

हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसंभवा |
आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया || 105 ||

मातृका माधवी मुच्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्धिदा |
सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमंगळा || 106 ||

श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना |
हंसा हीनकरी हंसी हृद्या हृत्कमलालया || 107 ||

सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायतेक्षणा |
सावित्री सत्यसंकल्पा कामदा कामकामिनी || 108 ||

दर्शनीया दृशा दृश्या स्पृश्या सेव्या वरांगना |
भोगप्रिया भोगवती भोगींद्रशयनासना || 109 ||

आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी |
श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा || 110 ||

अचिंत्यानंतविभवा भवभावविभावनी |
निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता || 111 ||

बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया |
तोषिणी पूर्णचंद्राभा एकानंदा शतानना || 112 ||

उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी |
कूष्मांडी दारुणा चंडा किराती नंदनालया || 113 ||

कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी |
सौदामिनी मेघरवा दैत्यदानवमर्दिनी || 114 ||

जगन्माताऽभयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा |
काश्यपी शुभदाना च वनमाला शुभा वरा || 115 ||

धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्धिनी |
गांधर्वी रेवती गंगा शकुनी विमलानना || 116 ||

इडा शांतिकरी चैव तामसी कमलालया |
आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया || 117 ||

जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना |
मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता || 118 ||

व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला |
रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गंधलक्ष्मीर्वनाश्रया || 119 ||

श्रवणा श्रावणी नेत्री रसनाप्राणचारिणी |
विरिंचिमाता विभवा वरवारिजवाहना || 120 ||

वीर्या वीरेश्वरी वंद्या विशोका वसुवर्धिनी |
अनाहता कुंडलिनी नलिनी वनवासिनी || 121 ||

गांधारिणींद्रनमिता सुरेंद्रनमिता सती |
सर्वमंगळ्यमांगळ्या सर्वकामसमृद्धिदा || 122 ||

सर्वानंदा महानंदा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता |
सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः || 123 ||

अरुंधती वसुमती भार्गवी वास्तुदेवता |
मयूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना || 124 ||

अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा |
राजश्रीरूपसहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवंदिता || 125 ||

जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सतां |
सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलप्रिया || 126 ||

धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी |
कद्रूर्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी || 127 ||

महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा |
सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिः प्रभाकरी || 128 ||

तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती |
रत्ना रत्नावलीभूता शतधामा शतापहा || 129 ||

त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्दिनी घोषवर्जिता |
साध्याऽदितिर्दितिर्देवी मृगवाहा मृगांकगा || 130 ||

चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नकराश्रया |
हिरण्यरजतद्वंद्वा शंखभद्रासनस्थिता || 131 ||

गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया |
मरीचिश्चीरवसना पूर्णचंद्रार्कविष्टरा || 132 ||

सुसूक्ष्मा निर्वृतिः स्थूला निवृत्तारातिरेव च |
मरीचिज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा || 133 ||

दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी संप्रबोधिनी |
भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचंडज्वलनोज्ज्वला || 134 ||

सांगा प्रचंडा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः |
कपिला नीलरक्ता च सुषुम्ना विस्फुलिंगिनी || 135 ||

अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा |
संपूर्णमंडला पूषा स्रंसिनी सुमनोहरा || 136 ||

जया पुष्टिकरी छाया मानसा हृदयोज्ज्वला |
सुवर्णकरणी श्रेष्ठा मृतसंजीवनी रणे || 137 ||

विशल्यकरणी शुभ्रा संधिनी परमौषधिः |
ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐंदवी रत्नसंभवा || 138 ||

विद्युत्प्रभा बिंदुमती त्रिस्वभावगुणांबिका |
नित्योदिता नित्यदृष्टा नित्यकामकरीषिणी || 139 ||

पद्मांका वज्रचिह्ना च वक्रदंडविभासिनी |
विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी || 140 ||

मानिनी मंगळा मान्या मानिनी मानदायिनी |
विश्वेश्वरी गणवती मंडला मंडलेश्वरी || 141 ||

हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी |
प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोऽभिज्ञा वदन्मतिः || 142 ||

यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबंधिनी |
अमृता धारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची || 143 ||

संकल्पा भामिनी मिश्रा कादंबर्यमृता प्रभा |
आगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताऽक्षता || 144 ||

सर्वार्थसाधनकरी धातुर्धारणिकाऽमला |
करुणाधारसंभूता कमलाक्षी शशिप्रिया || 145 ||

सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी |
माला कांचनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा || 146 ||

प्रक्रिया परमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया |
विजृंभणा च वज्राख्या शृंखला कमलेक्षणा || 147 ||

जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा |
मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा || 148 ||

धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा |
धुरंधरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता || 149 ||

सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसंबोधनोत्तमा |
सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्यशक्तिर्गुहालया || 150 ||

हलायुधा च कावीरा सर्वशास्त्रसुधारिणी |
व्योमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मधुमन्मयी || 151 ||

गंगा वितस्ता यमुना चंद्रभागा सरस्वती |
तिलोत्तमोर्वशी रंभा स्वामिनी सुरसुंदरी || 152 ||

बाणप्रहरणा बाला बिंबोष्ठी चारुहासिनी |
ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा || 153 ||

काम्यचारी च काम्या च कामाचारविहारिणी |
हिमशैलेंद्रसंकाशा गजेंद्रवरवाहना || 154 ||

अशेषसुखसौभाग्यसंपदां योनिरुत्तमा |
सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया || 155 ||

सर्वांगयोनिः साऽव्यक्ता संप्रधानेश्वरेश्वरी |
विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते || 156 ||

परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थलाश्रया |
सा देवी पापहंत्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम || 157 ||

इति नाम्नां सहस्रं तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहं |
परावरेण भेदेन मुख्यगौणेन भागतः || 158 ||

यश्चैतत्कीर्तयेन्नित्यं शृणुयाद्वापि पद्मज |
शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः || 159 ||

श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनैः |
भोगैश्च मधुपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुं || 160 ||

तत्पार्श्वस्थां श्रियं देवीं संपूज्य श्रीधरप्रियां |
ततो नामसहस्रेण तोषयेत्परमेश्वरीं || 161 ||

नामरत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत् |
प्रसादाभिमुखी लक्ष्मीः सर्वं तस्मै प्रयच्छति || 162 ||

यस्या लक्ष्म्याश्च संभूताः शक्तयो विश्वगाः सदा |
कारणत्वं न तिष्ठंति जगत्यस्मिंश्चराचरे || 163 ||

तस्मात्प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा |
सुप्रीताः शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशंति हि || 164 ||

एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः |
तदंशशक्तिमंतोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा || 168 ||

तथैवैका परा शक्तिः श्रीस्तस्य करुणाश्रया |
ज्ञानादिषाड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा || 166 ||

एकैकशक्तिः श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्तते |
परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी || 167 ||

अनंतनामधेया च शक्तिचक्रस्य नायिका |
जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता || 168 ||

तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी |
सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत् || 169 ||

यो यो जगति पुंभावः स विष्णुरिति निश्चयः |
या या तु नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता || 170 ||

प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते |
अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः || 171 ||

अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः |
महाविभूतिं दयितां ये स्तुवंत्यच्युतप्रियां || 172 ||

ते प्राप्नुवंति परमां लक्ष्मीं संशुद्धचेतसः |
पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठन् स्तोत्रमिदं क्रमात् || 173 ||

दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान् |
सकामानां च फलदामकामानां च मोक्षदां || 174 ||

पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनां |
महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः || 175 ||

करयुगळगृहीतं पूर्णकुंभं दधाना
क्वचिदमलगतस्था शंखपद्माक्षपाणिः |
क्वचिदपि दयितांगे चामरव्यग्रहस्ता
क्वचिदपि सृणिपाशं बिभ्रती हेमकांतिः || 176 ||

इति पद्मपुराणे काश्मीरवर्णने हिरण्यगर्भहृदये सर्वकामप्रदायकं पुरुषोत्तमप्रोक्तं श्री लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रं ||